



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website  
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhed  
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade  
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi  
<https://egangotri.wordpress.com/>



कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक  
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र 171 325 विषय शोभा  
नाव. शिवरामहरे अष्टक  
लेखक/लिपीकार —  
पृष्ठ २ काळ — पूर्ण/अपूर्ण

Checked 2012



॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः शिव हरे शिव राम सरस्व प्र  
 नोत्रि विधिता पनी वारण हे प्र नो प्र जजने  
 स्वर आहव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु वरं  
 ॥ १ ॥ कमल नो व न राम ह आनि धे हर गु रोग  
 ज रत्न के गो प ते शिव तनो न व शं कर पाहि मां  
 शिव ॥ २ ॥ स्व जनि रं ज न म ग न मं दि रं न ज  
 तिले पुरुष पर म प ह न व तिले स्प सूरं व प  
 र मा प्र तं शिव ॥ ३ ॥ जय युधिष्ठिर व द्भु न  
 नु प ते जय ज आर्जित पुण्य पयो नि धे जय  
 क पा म अ कृ द्भु म नो स्तु ते शिव ॥ ४ ॥ न व  
 वि नो व न मा धे मा प ते सू क वि मान सह ॥  
 स शि वा र ते ज न के जा रत्न रा ध व रु ह मा शिव  
 ॥ ५ ॥ प्र व नी मंड न म ग न मा प ते ज न ह ॥

मे

२



म

सुहृदरामरमापतेनिगमगीतगुणाएविवगे  
पतेत्रिव०॥६॥ प्रपहजासुखदायकमव्ययं  
मकरकुंडलशोभिमुखं वंजं महूरहंप्रण  
मामिरमापतेत्रिव०॥७॥ मुहुमहे शयने  
सरुडवाहनपावनपाहिमांत्रिव०॥८॥  
प्रतिपाननामहयात्नतातव्यसं  
वितनपरीगायतेतहपिमाध्वनामाकिमु  
पेछसिद्धिव०॥९॥ प्रमरहीयनहेनरु  
मापतेविषमतात्वयिनास्तिधनोपमेमया  
कथंकरुणाएवजायतत्रिव०॥१०॥ हनु  
मतेःप्रियतौषकनरपुनोसुरसरिधत  
शेषहरेगुणममविशोकोमुनिविस्मृतं



२ शिव० ११ नरहरेरतिरंजनसुंदरं पठति  
अशिवरामकृतं स्तवं सति शमरमाव  
रं एव जं शिव० ॥ १२ ॥ प्रातरुस्थाय यो न  
त्पापं वै सौ न मुतमं विजो जायते न  
नं विदुः मा राध्यमाप्नुयात् ॥ १३ संवत्



[OrderDescription]  
,CREATED=02.12.19 12:22  
,TRANSFERRED=2019/12/02 at 12:25:15  
,PAGES=4  
,TYPE=STD  
,NAME=S0002255  
,Book Name=M-325-SHIVRAM HARE ASHTAK  
,ORDER\_TEXT=  
,[PAGELIST]  
,FILE1=00000001.TIF  
,FILE2=00000002.TIF  
,FILE3=00000003.TIF  
,FILE4=00000004.TIF  
,